AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य में भारतीय सशस्त्र बलों का योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. गीतांजलि चन्द्राकर
हितेश कुमार पटेल
डॉ. प्रवीण कुमार कड़वे
रक्षा अध्ययन विभाग
शासकीय नागार्जुन पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज ऑफ साइंस
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारतीय सशस्त्र बल हमारे देश की शक्ति, गौरव और सुरक्षा की प्रतीक है। यह न केवल सीमाओं की रक्षा करते है, बल्कि आपदा, संकट और शांति स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। भारतीय सशस्त्र बल का हर जवान "सेवा, समर्पण और त्याग" की भावना से राष्ट्र की रक्षा हेतु सदैव तत्पर रहते है। भारतीय सशस्त्र बल केवल एक संगठन नहीं, बल्कि भारत की आत्मा और गौरव का प्रतीक हैं। इनका प्रमुख उद्देश्य भारतीय सीमाओं की रक्षा करना, बाहरी खतरों का सामना करना और आंतरिक सुरक्षा बनाए रखना है। भारतीय सशस्त्र बल के प्रत्येक सैनिकों के जीवन का आधार –"सेवा परमो धर्मः" हैं। भारतीय सशस्त्र बल के कर्तव्यों में सीमाओं की रक्षा (विशेषकर पाकिस्तान और चीन से लगी सीमाओं की) करना और उग्रवाद एवं आतंकवाद जैसे आंतरिक खतरों से निपटना शामिल है। आधुनिक युद्ध के लिए तैयार रहने के लिए, भारतीय सशस्त्र बल प्रतिष्ठित अकादमियों में कठोर प्रशिक्षण लेते हैं, साथ ही भारत की भौगोलिक बनावट के कारण भारतीय सशस्त्र बल को अनेक प्रकार की चुनौतियों जैसे बर्फीले ग्लेशियर, रेतीले रेगिस्तान, जंगल और विषम मौसम का सामना करना पड़ता है। वे ऐसी चुनौतियों का हँसकर सामना करते हैं और राष्ट्र के लिए बड़े से बड़े बलिदान देने को तैयार रहते हैं। भारतीय सशस्त्र बल के सभी सैनिकों पर आपसी भाईचारे और सहयोग की भावना बनी रहती है। सैनिक तीन 'न' अर्थात् नाम (व्यक्तिगत सम्मान), नमक (राष्ट्र के प्रति वफादारी) और निशान (अपनी यूनिट/रेजीमेंट के निशान) के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने के हेतु सदैव तत्पर रहते है। दुश्मन से लड़ते हुए वे अपनी वीरता दर्शाते हैं। सेना में जाति, धर्म, भाषा या किसी अन्य भेद–भाव का स्थान नहीं होता। इससे टीम भावना और एकता सुदृढ़ रहती है। भारतीय सेना के जवान विविधता में एकता का प्रतीक हैं, जो कठिन परिस्थितियों में निस्वार्थ भाव से सेवा करते हैं, जो प्रत्येक सैनिक को राष्ट्र की सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करता है। अनगिनत सैनिकों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए परमवीर चक्र जैसे पदकों से सम्मानित किया गया है।

मुख्य शब्द

राष्ट्रीय सुरक्षा, भारतीय सशस्त्र बल, आपदा प्रबंधन, ऑपरेशन सिंदूर, आतंकवाद, साइबर खतरें.

प्रस्तावना

भारतीय सेना का इतिहास ब्रिटिश औपनिवेशिक काल से शुरू होता है, जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने सेना का गठन किया था। वर्ष 1895 में तीन प्रेसीडेंसी सेनाओं को मिलाकर भारतीय सेना की स्थापना की गई थी। वर्ष 1947 में स्वतंत्रता उपरांत, भारतीय सेना का पुनर्गठन किया गया और इसे एक राष्ट्रीय सेना के रूप में स्थापित किया गया। वर्ष 1949 में 15 जनवरी को थल सेना के पहले भारतीय ''कमांडर–इन–चीफ'' लेफ्टिनेंट जनरल के.एम. करिअप्पा ने आखिरी ब्रिटिश सी–इन–सी जनरल सर फ्रांसिस बूचर से कार्यभार संभाला।

(Gen. K.M. Cariappa, First C.O.C.)

ब्रिटिश राज में भारतीय सेना

अंग्रेजों ने कभी भारतीयों पर भरोसा नहीं किया। सैन्य विद्रोह के कारण अंग्रेजों ने देसी सेनाओं का निर्माण किया। भारतीय सैनिकों को कोई हथियार नहीं दिया जाता था, और उनके साथ सख्त व्यवहार होता था। जब ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी से सत्ता संभाली तो उन्होंने एक स्वतंत्र ब्रिटिश सेना बनाई, जिसके उच्च अधिकारी अंग्रेज होते थे। इसके साथ ही भारतीय सैनिकों के बैरक (सिपाहियों के रहने के स्थान) अंग्रेजों से अलग थे।

ब्रिटिश भारतीय सेना में वायसराय सुप्रीम कमांडर होता था। 1920 के दशक में ब्रिटिश सरकार ने सैंडहर्स्ट मिलिट्री कॉलेज इंग्लैंड में भारतीय कैडेटों के प्रवेश को मंजूरी दी, जिससे भारतीय अफसर बनने लगे। 1930 में भारतीयकरण की प्रक्रिया शुरू हुई जिसमें भारतीयों को उच्च अफसरों के पदों पर नियुक्ति दी गई। विविध धर्मों तथा वर्गों से सैनिकों की भर्ती की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य भारत में पुलिस बल की शुरुआत करना था।

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों ने विदेशी धरती पर अपनी सेवाएँ दीं। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक भारतीय सेना सबसे बड़ी स्वयंसेवक सेना बन गई। पहले विश्व युद्ध में 10 लाख से ज्यादा भारतीय सैनिकों ने यूरोप, भूमध्य सागर के क्षेत्र और पश्चिम एशिया के मोर्चों पर जाकर अंग्रेजों के लिए लड़ाई लड़ी थी। इस युद्ध में 74,187 भारतीय सैनिक शहीद और 67,000 घायल हुए थे। द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारतीय सेना के पास करीब 2 लाख सैनिक थे, युद्ध खत्म होते–होते उनकी संख्या 25 लाख तक पहुंच चुकी थी। इस युद्ध में 87,000 भारतीयों ने अपनी अपने प्राणों की आहुति दी थी। सन् 1942 से 1947 तक भारतीय सेना के कमांडर–इन–चीफ रहे फील्ड मार्शल क्लॉड ऑकिलेक का कहना था कि –''भारतीय सेना नहीं होती तो अंग्रेज दोनों विश्व युद्ध में विजय हासिल नही कर पाते।''

स्वतंत्र भारत में सशस्त्र सेना

भारत भूमि, जो आदिकाल से वीरों की जननी रही है, उसकी सुरक्षा और अखंडता की जिम्मेदारी जिन कंधों पर है, वे हैं हमारी भारतीय सेना के जांबाज जवान। भारतीय सेना केवल एक सैन्य संगठन नहीं, बल्कि यह भारत के शौर्य, साहस, बलिदान और अटूट राष्ट्र निष्ठा का जीवंत प्रतीक है। यह वह शक्ति है जो हमारी सीमाओं की रक्षा करती है, आपदाओं में राहत पहुँचाती है और विश्व शांति में भी अपना अमूल्य योगदान देती है। भारतीय सेना का पराक्रम केवल युद्ध के मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश के हर संकट में जनता के साथ खड़ी रहने वाली एक ढाल है। भारत की सैन्य शक्ति मुख्य रूप से तीन गौरवशाली अंगों में विभाजित है– भारतीय थल सेना (Indian Army), भारतीय वायु सेना (Indian Air Force) और भारतीय नौ सेना (Indian Navy)। ये तीनों भुजाएँ मिलकर भारत की सुरक्षा को अभेद्य बनाती हैं।

भारतीय सैन्य बल के तीन अजेय अंग

1. **भारतीय थल सेनाः** भूमि पर अटल प्रहरी, यह भारतीय सैन्य शक्ति का सबसे बड़ा और सबसे पुराना अंग है। ''सर्विस बिफोर सेल्फ'' (स्वयं से पहले सेवा) के आदर्श वाक्य पर चलने वाली थल सेना, देश की भू–सीमाओं की रक्षा करती है। चाहे वह घुसपैठियों को रोकना हो, आतंकवाद विरोधी अभियान चलाना हो या प्राकृतिक आपदाओं के दौरान नागरिकों की सहायता करना हो, थल सेना के जवान हमेशा सबसे आगे रहते हैं। इनकी बहादुरी, रणनैतिक कौशल और विषम परिस्थितियों में भी टिके रहने का जजबा अद्वितीय है। सियाचिन की जमा देने वाली ठंड हो या राजस्थान की झुलसाने वाली गर्मी, थल सेना का हर जवान देश के लिए समर्पित है।

2. **भारतीय वायु सेनाः** भारतीय वायु सेना, देश के हवाई क्षेत्र की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। आधुनिकतम लड़ाकू विमानों, हेलीकॉप्टरों और परिवहन बेड़े से लैस वायु सेना, न केवल हवाई रक्षा में सक्षम है, बल्कि दुश्मन के ठिकानों पर सटीक हमले करने, सैन्य साजो–सामान पहुंचाने और आपदा राहत अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ''नभः स्पृशं दीप्तम'' (आकाश को गौरव के साथ छूना) के अपने ध्येय वाक्य को चरितार्थ करते हुए, इसके पायलट और ग्राउंड स्टाफ अपनी दक्षता और साहस के लिए जाने जाते हैं।

3. **भारतीय नौसेनाः** समुद्री सीमाओं के प्रहरी भारतीय नौसेना देश की समुद्री सीमाओं और व्यापारिक समुद्री मार्गों की सुरक्षा करती है। ''शं नो वरुणः'' (जल के देवता वरुण हमारे लिए शुभ हों) के आदर्श वाक्य के साथ, नौसेना समुद्री डकैती विरोधी अभियानों, मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) में सक्रिय रहती है। भारत की बढ़ती ''ब्लू–वॉटर'' क्षमता और परमाणु पनडुब्बियां इसे हिंद महासागर क्षेत्र में एक दुर्जेय शक्ति बनाती हैं। इसके नाविक और अधिकारी समुद्र की लहरों पर देश के हितों की रक्षा करते हैं। इन तीनों अंगों के बीच बेहतरीन समन्वय और संयुक्त प्रशिक्षण, भारतीय सेना को किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रखता है।

राष्ट्रीय एकता में योगदान

भारतीय सशस्त्र बलों की एक और भूमिका की ओर हम कम ध्यान दे पाते हैं। यह है ''राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने में इनका योगदान''। भारतीय सशस्त्र बल देश का सबसे बड़ा संगठन है जिसमें देश के हर क्षेत्र के लोग शामिल है। इससे बड़ी बात यह है कि सेना धर्मनिरपेक्षता की सबसे बड़ी मिसाल है। इसमें हिंदू, मुस्लिम, सिख और इसाई अपने उत्सव मिलकर मनाते हैं। वर्ष 1947 के बाद से राष्ट्र निर्माण में सेना की भूमिका अद्वितीय रही है।

जूनागढ़ (1947), हैदराबाद (1948), गोवा (1961) और सिक्किम (1975) को भारतीय संघ के साथ सम्मिलित करने में भारतीय सशस्त्र बलों ने महत्वपूर्ण भूमिका रही, मालदीव और श्रीलंका की सरकारों को बचाने में भी अविस्मरणीय योगदान दिया, साथ ही इराक (2003), लेबनान (2006), इराक (2014), यमन (2015), नेपाल(2015), अफगानिस्तान(2021), यूक्रेन(2022), तुर्किये(2023), म्यांमार(2025) एवं श्रीलंका (2025) में फंसे भारतीयों को निकालने में मदद की।

पूरे देश में बाढ़ राहत के लिए भारतीय सशस्त्र बलों को बुलाया जाता है। इन्होंने न केवल लातूर और धारचूला में आए भूकंपों और केदारनाथ तथा कुमाऊं की पहाड़ियों में भूस्खलन के दौरान जमीन के नीचे दबे लोगों के शव को बाहर निकाला, अपितु दिसंबर 2004 में आई दक्षिण पूर्व एशिया की सुनामी के दौरान दृढ़ संकल्प के साथ राहत कार्य में शामिल हुए। इसके साथ ही उड़ीसा और आंध्र में आए समुद्री तूफानों के दौरान भारतीय सशस्त्र बलों ने

अपनी जान की परवाह किए बगैर राहत और बचाव कार्यों में भागीदारी की। सीमावर्ती इलाकों में सेना के डॉक्टर चिकित्सा कार्य भी करते हैं। देश के सुदूर इलाकों में सेना ही भारत की ध्वजवाहक होती है। सेवानिवृत होने के बाद भी सैनिक जीवन समाज में राष्ट्रीयता और अनुशासित जीवन शैली का संदेश देते हैं।

स्वतंत्रता उपरांत युद्धों में भारतीय सशस्त्र बलों का योगदान

भारतीय सशस्त्र बलों का इतिहास वीरता बलिदान और अटूट समर्पण से बना हुआ एक ताना–बाना है। वर्ष 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद से, हमारे सशस्त्र सेनाएं, विशेष कर थल सेना आक्रांताओं के विरुद्ध एक मजबूत दीवार बनकर खड़ी रही और राष्ट्र की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करती रही है। भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा लड़े गए युद्धों में न केवल देश के भाग्य को आकार दिया, बल्कि सैनिकों के अदम्य साहस का भी उदाहरण प्रस्तुत किया। हमारी सेनाओं ने कई मौकों पर देश की रक्षा का भार उठाया है। यह रक्षा मुख्यतः युद्धों एवं युद्ध जैसी परिस्थितियों में पैदा होती रही है, जैसे कि कारगिल संघर्ष या वर्ष 2025 में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमने देखी एवं अनुभव की हैं। इसके अलावा हमारी सेना प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं तथा इसी प्रकार के मानवीय संकटों में मदद के लिए आती है। उनकी बहादुरी के किस्से स्वतंत्रता पूर्व से सुने जाते रहे हैं। दोनों विश्व युद्धों में हमारे बहादुर सैनिकों ने देश का नाम ऊंचा किया ही है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में स्वतंत्रता के बाद के कुछ प्रमुख युद्धों का विश्लेषण किया गया है। स्वतंत्रता के बाद से भारतीय सशस्त्र बलों ने निम्नलिखित प्रमुख युद्ध लड़े है–

भारत के प्रमुख युद्ध एवं परिणाम

युद्ध /संघर्ष	वर्ष	कारण	परिणाम
भारत–पाक युद्ध	1947–48	कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान के साथ जम्मू–कश्मीर का विभाजन	नियंत्रण रेखा (Ceasefire Line) स्थापित
गोवा मुक्ति (ऑपरेशन विजय)	1961	पुर्तगाली शासन का अंत कर गोवा को भारत में मिलाना	गोवा, दमन एवं दीव का भारतीय संघ में विलय
भारत–चीन युद्ध	1962	अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश में सीमा विवाद	अक्साई चिन पर चीन का कब्जा
भारत–पाक युद्ध	1965	कश्मीर पर पाकिस्तान के साथ युद्धविराम	ताशकंद समझौता
भारत चीन युद्ध	1967	नाथुला में भारत और चीन के बीच सैन्य संघर्ष	1962 के युद्ध में मिली हार के बाद भारतीय गौरव की वापसी
भारत–पाक युद्ध	1971	बांग्लादेश मुक्ति संग्राम	बांग्लादेश का निर्माण, भारत की निर्णायक जीत
ऑपरेशन ब्लू स्टार	1984	अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर में	आतंकवाद समाप्त करने हेतु भारतीय सेना ने आतंकियों को समाप्त किया
ऑपरेशन मेघदूत	1984	सियाचिन ग्लेशियर पर सामरिक नियंत्रण स्थापित करना	भारत ने सियाचिन के अधिकांश भाग पर नियंत्रण स्थापित किया
ऑपरेशन पवन	1987	श्रीलंका में भारतीय शांति बल द्वारा शांति स्थापना	LTTE के विरुद्ध कार्रवाईय बाद में वापसी
ऑपरेशन कैक्टस	1988	मालदीव में तख्तापलट के प्रयास को विफल करना	भारत ने सरकार बचाईय अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा
कारगिल संघर्ष	1999	पाकिस्तान समर्थित घुसपैठियों के साथ कारगिल क्षेत्र में	भारत की जीत, घुसपैठिए खदेड़े गए
उरी सर्जिकल स्ट्राइक	2016	उरी हमले के बाद जवाबी कार्रवाई	LOC पार आतंकी ठिकाने नष्ट
बालाकोट एयर स्ट्राइक (ऑपरेशन बंदर)	2019	पुलवामा आतंकी हमले के बाद कार्रवाई	जैश–ए–मोहम्मद के ठिकानों पर हवाई प्रहार
भारत– चीन टकराव	2020	गलवान क्षेत्र में LAC विवाद	दोनों पक्षों के सैनिक हताहत
ऑपरेशन सिंदूर	2025	पहलगाम आतंकी हमले के बाद कार्रवाई	भारत द्वारा पाकिस्तान पोषित आंतकवादी प्रशिक्षण शिविर पर हवाई प्रहार

*(**स्रोत**: शोधकर्ताओं के द्वारा तैयार किया गया)*

1947–48 का भारत पाक युद्ध

स्वतंत्र भारत का जन्म पहले बड़े संघर्ष (1947–48 के भारत पाक युद्ध) से हुआ था, जिसे प्रथम कश्मीर युद्ध कहा जाता है। भारतीय सेना के सामने पाकिस्तान सेना से जम्मू और कश्मीर रियासत की रक्षा करने की चुनौती थी। यह युद्ध न केवल सैन्य शक्ति का परीक्षण था बल्कि अभी अपनी संप्रभुता की रक्षा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता का भी प्रदर्शन था। भारतीय सेना के त्वरित हस्तक्षेप और उसके बाद राज्य की रक्षा के परिणाम स्वरुप नियंत्रण रेखा (एल ओ सी) की स्थापना हुई, जिसने एक स्थायी क्षेत्रीय विवाद की शुरुआत को चिन्हित किया।

गोवा मुक्ति (ऑपरेशन विजय, 1961)

वर्ष 1961 में पुर्तगालियों से गोवा की मुक्ति भारतीय सैन्य इतिहास का एक सुनहरा अध्याय है। राष्ट्र के हितों की रक्षा और भारतीय संघ में क्षेत्रों के एकीकरण के लिए भारतीय सेना के संकल्प को इस ऑपरेशन ने एक नई पहचान दी। गोवा और अन्य क्षेत्रों को पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन से मुक्त करना, राजनीतिक नेतृत्व के निर्देशानुसार, भारतीय थल सेना ने एक सुनियोजित अभियान चलाकर पूरा किया।

भारतीय वायुसेना और नौसेना ने इस अभियान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। गोवा मुक्ति अभियान ने इस बात को सिद्ध किया कि भारतीय सशस्त्र बलों ने किसी भी विदेशी औपनिवेशिक–विरोधी और एकता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

भारत–चीन युद्ध 1962

वर्ष 1962 का भारत–चीन युद्ध, 20 अक्टूबर से 21 नवंबर 1962 तक चला था। यह युद्ध भारत और चीन के बीच, विशेष रूप से अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश (तत्कालीन नेफा) में सीमा विवाद का परिणाम था। चीन ने 20 अक्टूबर को लद्दाख और मैकमोहन रेखा के साथ–साथ भारत पर हमला किया। भारतीय थल सेना इस युद्ध के लिए तैयार नहीं थी। इस युद्ध में भारत को काफी नुकसान हुआ और अक्साई चिन से भारत को नियंत्रण खोना पड़ा। भारतीय सेना को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसमें दुर्गम क्षेत्र, कठोर मौसम और रसद की कमी शामिल थी।

भारतीय सैनिकों ने अदम्य साहस और वीरता का प्रदर्शन किया, लेकिन चीनी सैनिकों की अधिक संख्या और बेहतर हथियार इस युद्ध में महत्त्वपूर्ण साबित हुई। यह युद्ध भारतीय सैन्य इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम था। युद्ध ने भारत की सुरक्षा नीतियों और विदेश नीति पर गहरा प्रभाव डाला।

भारत–पाक युद्ध 1965

वर्ष 1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव एक बार फिर बढ़ गया, जिसके परिणामस्वरूप 1965 का भारत–पाक युद्ध हुआ। भारतीय थल सेना ने पाकिस्तानी आक्रमण के विरुद्ध राष्ट्र की रक्षा में अदम्य साहस और संकल्प का परिचय दिया। विशेषकर लोंगेवाला की लड़ाई ने भारतीय सैनिकों की वीरता और रणनीतिक कौशल का प्रदर्शन किया। इस युद्ध ने बाहरी खतरों को रोकने तथा भारत की संप्रभुता की रक्षा करने की भारतीय सेना की क्षमता को उजागर किया।

भारत चीन युद्ध 1967

वर्ष 1967 में नाथुला में भारत और चीन के बीच पुनः सैन्य संघर्ष सिक्किम में हुआ था। इस संघर्ष में भारतीय सेना ने चीन को करारी शिकस्त दी। 11 सितम्बर, 1967 को चीनी सेना ने नाथुला में भारतीय चौकियों पर हमला किया। इसके बाद, 1 अक्टूबर, 1967 को चोला में भी दोनों देशों के बीच झड़प हुई। इस संघर्ष में भारतीय सेना ने चीनी सेना को भारी नुकसान पहुँचाया। यह संघर्ष भारत–चीन युद्ध के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना है, जिसने 1962 के युद्ध में मिली हार के बाद भारत के गौरव को वापस दिलाया।

भारत पाक युद्ध 1971

वर्ष 1971 का भारत–पाक युद्ध जिसे बाग्लांदेश मुक्ति संग्राम भी कहा जाता है, जिससे बांग्लादेश के निर्माण का कारण बना। भारतीय थल सेना ने मुक्ति वाहिनी का समर्थन करने और अंततः पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना को पराजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस युद्ध में मानवीय सिद्धांतों के प्रति भारतीय सेना की प्रतिबद्धता और क्षेत्र के भू–राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाया।

ऑपरेशन मेघदूत 1984

ऑपरेशन मेघदूत भारतीय सेना के दृढ़ संकल्प और रणनीतिक दूरदर्शिता का प्रमाण था। वर्ष 1984 में शुरू किए गए इस अभियान का उद्देश्य सियाचिन ग्लेशियर क्षेत्र को सुरक्षित करना था। दुर्गम भू–भाग ने इस अभियान को एक कठिन चुनौती बना दिया था। हालांकि भारतीय सेना द्वारा इस अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम देने से इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में भारत की स्थिति मजबूत हुई, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सैनिकों की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ऑपरेशन ब्लू स्टार 1984

स्वर्ण मंदिर परिसर में भारतीय थल सेना के हस्तक्षेप का उद्देश्य कानून व्यवस्था बहाल करना था। इस ऑपरेशन ने आंतरिक खतरों से निपटने की जटिल प्रकृति को रेखांकित किया।

ऑपरेशन पवन 1987

ऑपरेशन पवन वर्ष 1987 में भारत–श्रीलंका समझौते के तहत भारतीय शांति सेना बल (IPKF) द्वारा श्रीलंका में LTTE को निःशस्त्र करने के लिए शुरू किया गया सैन्य अभियान था। शुरू में यह शांति–स्थापना मिशन था, परंतु LTTE द्वारा समझौते का उल्लंघन करने पर यह सीधा सैनिक संघर्ष बन गया। जाफना प्रायद्वीप में सबसे कठिन गुरिल्ला युद्ध लड़ा गया और विश्वविद्यालय क्षेत्र LTTE का प्रमुख गढ़ था। अभियान को स्थानीय विरोध, कठिन भू–भाग और राजनीतिक दबाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अंततः अपेक्षित सफलता न मिलने पर 1990 में IPKF को वापस बुला लिया गया।

ऑपरेशन कैक्टस 1988

वर्ष 1988 में हिंद महासागर में स्थित मालदीव की सरकार के तख्ता पलट की कोशिश की गई। यह प्रयास अब्दुल्ला लूथफी के नेतृत्व में मालदीव के एक समूह ने किया था, जिसे श्रीलंका के पीपुल्स लिब्रेशन आर्गेनाइजेशन ऑफ तमिल ईलम (प्लोट) का समर्थन हासिल था। भारतीय सेना के हस्तक्षेप के कारण तख्तापलट विफल रहा, जिसका सैन्य अभियान का भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा ऑपरेशन कैक्टस कोड नाम रखा गया था। ऑपरेशन 3 नवंबर की रात को शुरू हुआ, जब भारतीय वायु सेना के इल्युशिन आई–76 विमान ने 50 वीं स्वतंत्र पैराशूट ब्रिगेड के सैनिकों को उतारा। राष्ट्रपति मौमुन अब्दुल गयूम की अपील के बाद 9 घंटे के भीतर भारतीय वायु सेना मालदीप पहुंच गई और श्रीलंका के पीपुल्स लिब्रेशन आर्गेनाइजेशन ऑफ तमिल ईलम (प्लोट) के तख्तापलट को विफल किया।

कारगिल संघर्ष 1999

वर्ष 1999 का कारगिल संघर्ष भारतीय राष्ट्र की स्मृति में अंकित है। जम्मू और कश्मीर के कारगिल जिले में पाकिस्तानी घुसपैठियों ने एक कठिन चुनौती पेश की थी। भारतीय थल सेना ने घुसपैठियों को खदेड़ने के लिए तुरंत ऑपरेशन विजय शुरू किया, इसके साथ ही नौ सेना के द्वारा ऑपरेशन तलवार और वायु सेना के द्वारा ऑपरेशन सफेद सागर ने रणनीतिक योजना और विपरीत परिस्थितियों में साहस का परिचय दिया। इस सफल अभियान ने देश की सीमाओं की सुरक्षा के प्रति सेना की प्रतिबद्धता को दर्शाया।

इसी तरह 26 साल पहले पाकिस्तान सेना कश्मीरी चरम पंथियों की आड़ में कारगिल की पहाड़ियों पर कब्जा जमा लिया था। यह एक अप्रत्याशी प्रयास था, धोखाधड़ी का। 3 मई 1999 को पहली बार हमें कारगिल में पाकिस्तान कब्जे की खबर मिली और 26 जुलाई को पाकिस्तान सेना आखिरी चोटी से अपना कब्जा छोड़कर वापस लौट गई।

करीब 50 दिन की जबर्दस्त संघर्ष के बाद भारतीय सेना ने चोटियों पर कब्जा जमाए बैठी पाकिस्तानी सेना को एक के बाद एक पीछे हटने को मजबूर कर दिया।

सर्जिकल स्ट्राइक 2016

वर्ष 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक में सीमा पर आतंकवाद के प्रति भारत की प्रतिक्रिया में एक क्रांतिकारी बदलाव ला दिया। भारतीय सेना के एक बड़े अड्डे पर हुए आतंकवादी हमले के जवाब में भारतीय सेना ने नियंत्रण रेखा को पार करते हुए सर्जिकल स्ट्राइक को अंजाम दिया। इन हमलों के पीछे की सटीक और रणनीतिक योजना ने राष्ट्र की सुरक्षा के प्रति भारतीय सेना की प्रतिबद्धता और निर्णायक कार्यवाही करने की उसकी तत्परता को रेखांकित किया।

बालाकोट एयर स्ट्राइक (ऑपरेशन बंदर) 2019

14 फरवरी 2019 को पुलवामा में हुए एक आतंकी घटना के बाद 26 फरवरी 2019 को पाकिस्तान के बालाकोट में भारतीय वायु सेना युद्धक विमानों ने आतंकवादी समूह जैश–ए–मोहम्मद के एक प्रशिक्षण शिविर में बमबारी को अंजाम दिया। भारतीय खुफिया सूत्रों के अनुसार यह शिविर बालाकोट से 20 किलोमीटर दूर एक पहाड़ी जंगल में स्थित था, जिसमें 500–700 आतंकवादियों के लिए जगह और कमरे थे। इस हमले के अगले दिन, पाकिस्तान ने एक भारतीय युद्धक विमान को मार गिराया और उसके पायलट अभिनंदन वर्धमान को बंदी बना लिया, जिन्हें बाद में रिहा कर दिया गया।

भारत चीन टकराव 2020

वर्ष 2020 में भारत और चीन के बीच पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में हिंसक झड़ते हुई। झड़पें लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास हुई, जहां दोनों देशों की सेनाएं तैनात थी। 15 जून 2020 को, लद्दाख की गलवान घाटी में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हिंसक झड़प हुई। इस झड़प में 20 भारतीय सैनिक शहीद हो गए, जबकि चीन ने अपने हताहतों की संख्या को कभी नहीं बताया, अनुमान है कि 80 से अधिक चीनी सैनिक इस झड़प में मारे गए।

ऑपरेशन सिंदूर 2025

भारतीय वायु सेना ने 6–7 मई की रात को पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत जम्मू और कश्मीर (पीओजेके) में किए गए एक सैन्य हवाई अभियान में आतंकवादी ढांचे को निशाना बनाया। जांच से पता चला कि आतंकवादी मस्जिद की आड़ में आतंकी साजिशें करते थे। यह सैन्य हवाई अभियान 22 अप्रैल को हुए पहलगाम नरसंहार की प्रतिक्रिया में किया गया था। हमलावरों ने पीड़ितों को गोली मारने से पहले उनके नाम और धर्म पूछे थे, और उन्हें कलमा पढ़ने के लिए कहा था।

1947 से अब तक पाकिस्तान ने कश्मीर को हथियाने के कम से कम तीन बड़े प्रयास किये है। तीनों में कबाइलियों, अफगान मुजाहिदों और कश्मीरी जेहादियों के लश्करों की आड़ में पाकिस्तानी फौज पूरी तरह शामिल थी। कारगिल की घटना भी उन्हें प्रयासों का एक हिस्सा थी, और पहलगाम की घटना भी उन्हीं कोशिशों का एक हिस्सा थी।

कारगिल युद्ध ने भारतीय रक्षा–नीति में आधारभूत बदलाव किए थे। यह बदलाव दीर्घकालीन हैं और अब भी जारी हैं। इनकी रूपरेखा मूलतः दो महत्वपूर्ण रिपोर्टों पर आधारित हैं, जो तमाम दूसरी जांचों और रिपोर्टों का आधार बनीं। इनमें पहली है कारगिल युद्धोपरांत नियुक्त समिति की रिपोर्ट, जिसे के. सुब्रमण्यम की अध्यक्षता में मार्च 2000 में तैयार किया गया। यह महत्वपूर्ण रिपोर्ट इसके एक दशक बाद भी प्रासंगिक बनी रही। दूसरी महत्वपूर्ण रिपोर्ट इसके एक दशक बाद की नरेश चंद्रा समिति रिपोर्ट है। जिसे वर्ष 2011 में प्रस्तुत किया गया।

वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद भी देश की रक्षा व्यवस्था को लेकर विमर्श हुआ, पर इसे आधारभूत परिवर्तन नहीं कहा जा सकता। कारगिल रिपोर्ट में आधारभूत परिवर्तन की प्रेरणा दी। कारगिल समीक्षा समिति ने

सैन्य मामलो के प्रमुख ;ब्वैद्ध की नियुक्ति की सलाह दी थी, जोकि लागू हो चुकी है। समिति ने बेहतर हवाई सिर्विलांस का सुझाव दिया था, जिसके लिए रिसैट श्रृंखला के उपग्रह पृथ्वी की कक्षा में भेजे जा चुके हैं। इसके अलावा भारतीय सेनाएं कई प्रकार के यूएवी का इस्तेमाल कर रही है। इन तकनीकों की सफलता को हमने ऑपरेशन सिंदूर में भी देखा।

निष्कर्ष

भारतीय सशस्त्र बल केवल देश की सीमाओं की प्रहरी नहीं, बल्कि राष्ट्र के सम्मान की रक्षक भी है। उसके जवान अपनी जान की परवाह किए बिना हर परिस्थिति में देश की सेवा करते हैं। भारतीय सशस्त्र बल का त्याग, समर्पण और अनुशासन हर भारतीय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। आज हमें गर्व है कि हमारी सेना विश्व की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में से एक है– जो सदैव भारत माँ की रक्षा में तत्पर रहती है।

संदर्भ सूची

1. कंवल, गुरमीत (2018) *राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियाँ एवं रणनीति,* सेंटर फॉर लैंड वॉरफेयर स्टडीज, नई दिल्ली।
2. बावेजा, हरिंदर (1999) *सोल्जर्स डायरीः कारगिल–एक अंदरूनी कहानी,* रोली बुक्स, नई दिल्ली।
3. के. सुब्रह्मण्यम (2005) *भारतीय सुरक्षा परिदृश्यः विश्लेषण और रणनीतिक दृष्टि,* एबीसी पब्लिशिंग, नई दिल्ली।
4. कोहेन, स्टीफन पी. (1990) *भारतीय सेनाः राष्ट्र–निर्माण में योगदान,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड।
5. Institute for Defence Studies and Analyses (IDSA) Indian Military Doctrine and National Security, Annual Strategic Review Reports.
6. India's Maritime Security Strategy (IMSS 2015) Integrated Headquarters, Ministry of Defence (Navy).
7. Joint Doctrine Indian Armed Forces (JDIAF 2017) Integrated Defence Staff, MoD.
8. Ministry of External Affairs (MEA) India's Strategic Partnerships and Defence Cooperation Documents.
9. Ministry of Defence, Government of India. Annual Report.
10. Press Information Bureau (PIB) Defence-related official statements and releases.
11. https://www.indianairforce.nic.in, Access on 10/09/2025.
12. https://www.indainarmy.nic.in, Access on 10/09/2025.
13. https://www.indiannavy.gov.in, Access on 10/09/2025.
14. https://www.nios.ac.in, Access on 10/09/2025.
15. https://www.pib.gov.in, Access on 10/09/2025.

––==00==––